

इंटरनेट और कामवासना

प्रा.डॉ. एम.बी. बिराजदार

प्रसिद्ध उपन्यासकार व पु. काळे के 'पार्टनर' उपन्यास की शुरुआत जीवनम में 'नर्क क्या है?' इसे होता है। पार्टनर को समझाते हुए कहा जाता है। एक सुंदर लडकी ... उसके दो मित्र. तीनों का एक दूसरे पर बेहद प्यार-याने हिंदी फिल्म-परिणामस्वरूप तीनों की आत्महत्या ! तीनों स्वर्ग में --- नों टेन्शन न कमाने की, न खाने की चिंता ऐशो आराम की जिंदगी ---दुनियाभर की गपशप. सुहावना वातावरण - तीनों का टहलना-सुंदर लडकी का एक हाथ एक मित्र के हात में दुसरा के हात में - आगे.एक का दाँए कंधे पर सर दूसरे का बाँए कंधे पर ।दोनों खुश कुछ समय तक लेकिन आगे दोनों मे समान बँटवारा असंभव !पहले मित्र को लगता है, भेरा मित्र मेरे रास्ते से अब हटना चाहिए। सुंदर लडकी को मुँझे सौपकर । दूसरे मित्र को भी वही लगता है । दोनों पीछे हटने के लिए तैयार नहीं, दोनों एक दूसरे पर टूट पडते है, एक दूसरे के खून के प्यासे बनते है। एक दूसरे पर तलवार चलाते है। दूसरा हँसता है ओर कहता है। तू कितना भी मार मै मरनेवाला नहीं और तू भी मरनेवाला नहीं क्योंकि मरने के बाद ही हम स्वर्ग में आये है।

शत्रू बने मित्र तलवार चलाने पर भी न मरना,चाहते हुए भी रास्ते से न हटना ही 'नर्क' है । इंटरनेट और कामवासना' की स्थिति भी आज बिलकुल वैसी ही बन गई है । "....."इंटरनेट एक माध्यम है। इसके सही उपयोग से जीवन नंदनवन बनता और गलत प्रयोग से मरुस्थल । जैसी हमारी दृष्टि वैसी सृष्टि दिखाई देती है। जीवन अनमोल है और इंटरनेट दूधारी अस्त्र है। सही तरीके से इसे पकडना आवश्यक है । वह अपने जीवन पर हावी न हो इसलिए सजग रहना जरूरी है। क्योंकि जीवन अनमोल है।

एक सुबह, अभी सूरज भी निकला नहीं था और एक मांझी नदी कि किनारे पहुंच गया था। उसका पैर किसी चीज से टकरा गया। झुककर उसने देखा, पत्थरों से भरा हुआ एक झोला पडा था।उसने अपने जाल किनारे पर रख दिया, वह सुबह के सूरज की प्रतिक्षा करने लगा। सूरज उग आए. वह अपना जाल फेंके और मछलियां पकडे। वह जो झोला उसे पडा हुआ मिल गया था, जिसमें पत्थर थे, वह एक - एक पत्थर निकालकर शांत नदी में फेंकने लगा। सुबह के सन्नाटे में उन पत्थरों के गिरने की छपाक की आवाज सुनता, फिर दूसरा पत्थर फेंकता। धीर-धीरे सुबह का सूरज निकला, रोशनी हुई।तब तक उसने

झोले के सारे पत्थर फेंक दिए थे, सिर्फ एक पत्थर रह गया था। सूरज की रोशनी में देखते ही उसके हृदय की धड़कन बंद हो गयी। जिसे पत्थर समझकर फेंक दिया था, वे हीरे थे, वह रोने चिल्लाने लगा। इतनी संपदा मिल गई थी जो अनंत जन्मों के लिए काफी थी, लेकिन अंधेरे में, अनजाने सारी संपदा पत्थर समझकर फेंक दिया था।

आज हम इंटरनेट रूपी मिरीचिका के पीछे लगकर अंधकार रूपी कामवासना को गले लगा रहे हैं। इस अंधेरे में, अज्ञान में पत्थरों के अलावा कुछ हाथ नहीं लगता। इस तरह देखा जाए तो भारत जैसे देश में कामवासना लोगों में एक कुंठा की तरह विकसित हो रही है। इंटरनेट के बेतहाशा उपयोग और टेक्नॉलॉजी के आने और विचारों में खुलापन होने के बाद जो चीजें पहले छुपाकर रखी जाती थी। आज वह खुलेआम हैं।”

कामवासना सबसे बड़ी बीमारी के रूप में उभरकर सामने आ रही है क्योंकि हमें बचपन से ही कुछ इस तरह के संस्कार दिए जाते हैं कि हम न तो अपने शरीर के अंगों के बारे में ठीक से जान पाते हैं। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं हम अपने शरीर के बारे में खुद से ही जानना शुरू कर देते हैं। घर में आज भी कोई बड़े अपने में अश्लील मजाक करते हैं। हमें तुरंत वहाँ से हटाया जाता है। कुल मिलाकर हमें पता ही नहीं होता है कि हमारे जननांगों का क्या है, अश्लील बातें क्या होती हैं और दुनिया में नए जीव की उत्पत्ति कैसे होती है। बड़े होने पर जैसे ही हमें अपने शरीर और सेक्स के बारे में थोड़ी जानकारी प्राप्त होती है। हम उसके बारे में और ज्यादा जानने के लिए उत्तेजित होने लगते हैं।

एक स्टडी के अनुसार भारत में से नब्बे व्यक्ति कामवासना का शिकार हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि ऐसे लोगों को पताही नहीं है कि यह समस्या वास्तव में समस्या है या नहीं। वे दिन-रात उसी में डूबते उतरते रहते हैं। बस उन्हें मौका चाहिए और वे सेक्स की बातें करना शुरू कर देते हैं। भारत में बढ़ती बलात्कार की घटनाओं से यह साबित होता है कि कामवासना से ग्रसित व्यक्ति किसी भी हद तक जा सकता है। इसका एक ताजा उदा. मेरे सामने 19 जनवरी 2020 का है. जिसमें समाचार छपा है कि स्कूल बस में घुसकर विकलांग छात्राओं पर बलात्कार किया गया है जिसमें गाड़ी का ड्राइवर भी शामिल है। दूसरी घटना है, कम उम्र की छटी कक्षा में पढ़नेवाली छात्रा पर शिक्षक का बलात्कार होने के कारण छात्रा को अस्पताल में भरती किया गया है और उसकी अवस्था गंभीर है।

आए दिन अखबारों में पढ़ने को मिलता है कि महिलाएँ और लड़कियाँ अपने बचपन में अपने ही रिश्तेदारों से यौन हिंसा का शिकार होते हैं। वास्तव में पिता-पुत्री, चाचा- भाई और रिश्तेदार पड़ोसी आदि

कामवासना के इतने बुरे शिकार होते हैं कि वह छोटी बच्चों को भी नहीं छोड़ते और गौका गिलतेही झपट पड़ते हैं। निश्चित ही यह सब इंटरनेट के खूपलेपन का असर है। आज के समय में कामवासना एक मनोविकार बनती जा रही है। बड़ा हो या बुढ़ा हर कोई कामवासना से ग्रसित है ओशो के शब्दों में “मनुष्य की आति कामुकता गलत शिक्षाओं का परिणाम है। पृथ्वी उसी दिन सेक्स से मुक्त होगी, जब हम सेक्स के संबंध में सामान्य, स्वस्थ बातचित करने में समर्थ हो जाएंगे। जब हम सेक्स को पूरी तरह से समझ सकेंगे। जगत में ब्रम्हचर्य का जन्म हो सकता है। मनुष्य सेक्स के ऊपर सकता है, लेकिन सेक्स समझकर, सेक्स को पूरी तरह पहचान कर उस ऊर्जा के पूरे अर्थ, मार्ग, व्यवस्था को जानकर उससे मुक्त हो सकता है।” बना लेता है। शुरु शुरु में ये चस्का है जो बादमें लत बन जाता है और इसके चक्कर में हम सबकुछ बर्बाद कर लेते हैं। फिर चाहे वो सेहत हो, रिश्ते हो, खुद का विकास हो सबकुछ रुक जाता है। इसका नशा युवा पीढ़ी को ही नहीं बच्चों से लेकर बड़े बुजुर्गों तक लगा हुआ है।

कामवासना पर हम कई तरीकों से विजय पा सकते हैं। दरअसल की भावना पर काबू पाना उसे दबा देना नहीं है बल्कि उसे एक दिशा देना है। हम विचारों में बदलाव कर, आदतों को बदल कर इसे किसी भी तरफ मोड़ सकते हैं। कामवासना एक उर्जा है जो हम पर इस कदर हावी होती जाती है की कुछ भी सोचने समझने की क्षमता नहीं रह जाती है। इसलिए उसे कंट्रोल करने के लिए अलग-अलग स्तर पर कदम उठाने चाहिए।

शारिरिक स्तर कामवासना की भावना पर काबू पाना इसके लिए स्टाइल में बदलाव करने की आवश्यकता है। जैसे की अकेले रहने को कम से कम कर दे क्योंकि कामुक प्रवृत्ति के व्यक्ति अकेले में अपने आपको कंट्रोल नहीं कर सकते, इसलिए लोगों के बीच रहे और जितना हो सके लोगों से मिलने की कोशिश करे। क्योंकि कुसंगति का फल बुरा और सुसंगति का फल अच्छा होता है। जैसे 'संगति कीजें साधू की तो दो बाते और, संगति कीजें गधे की तो दो लाते'। गधे की संगति में बाते नहीं लाते ही मिलते हैं। कहा गया है कि, जैसा खावे अन्न वैसा रहता है मन खान-पान में भी बदलाव आवश्यक है इसलिए खान-पान में बदलाव करें जैसे की हरी सब्जी का ज्यादा उपयोग, सात्विक अन्न का सेवन आदि। तामसिक अन्न, प्याज, लहसून आदि में उतेजना बढ़ानेवाले गुण होते हैं। हालाँकी इनका सेवन स्वास्थ्य के लिए सही है लेकिन कुछ समय के लिए उन्हें बंद करना ही ठीक है।

प्राणायाम योगा का भी आधार लिया जा सकता है। सुबह-सुबह उठने के बाद प्राणायाम योगा व्यायाम अपने दिनचर्या में शामिल करें। प्राणायाम से हमारा सांसो पर कंट्रोल होता है जो विचारों को नियंत्रित करती है। योग हमारे आंतरिक हिस्सो को स्वस्थ बनाए रखता है। वही व्यायाम करने से हम

बाहरी रूप से फिट रहते हैं। जो कि हमारे अंदर सकारात्मकता लाता है। मानसिक स्तर पर कामवासना की भावना काबू पाना कई सारे ऐसे उपाय हैं जो हमें मानसिक स्तर पर मजबूत बनाते हैं।

आज इंटरनेट पर हजारों की मात्रा में पोर्न व्हिडिओ और सैक्स स्टोरिज की वेबसाईट हैं जो हमें इसका आदी बनाकर अनैतिक राहपर ले जा रही हैं इससे स्वयंको बचाना और सबको बचाना इसके नुसकसान समझाना आवश्यक हो चुकी है। कामवासना की भावना पर काबू पाना इसलिए बेहद जरूरी बन चुका है क्योंकि लोगों ने इसे समझने में गलती की है। भावनाएं का नहीं नहीं सकते हैं इससे वो विकृत होने लगती है। क्योंकि भावना एक इजर्जी के रूपमें हमारे शरीर में रहती है और जब तक इसे प्रयोग न कर लिया जाय ये खत्म नहीं होती है। वास्तविक अर्थ और महत्व काम भावना/ कामवासना दोनों में सिर्फ समझने का फर्क है। काम भावना आपके अंदर बनी उर्जा का एक रूप है जबकि कामवासना किसी के प्रति शारीरिक आसक्ति या।”^४

इस प्रकार जब संतुलन बिगड जाता है तब हमारे अंदर हिंसक प्रवृति जन्म लेने लगती है। विवेक के नष्ट हो जाने की समस्या उत्पन्न होती है मानव शरीर में स्थित मुलाधार चक्र की उर्जा हमें संतुलन की स्थिति में बनाए रखती है। उसकी उर्जा को दिशा देकर हम बाकी सभी चक्र को आसानी से जागृत कर सकते हैं। उदा. सात अलग-अलग बर्तन हैं और सभी में एक अवरोध है जो पानी के बहाव को रोखने के काम आता है। सबसे पहले बर्तन में पानी डालना शुरू करे तो जब तक वो भरता है सब सही है लेकिन अगर हम उसमें ही उस पानी को भरते रहे आगे के बर्तन का अवरोध न हटाए तो क्या होगा? पानी बाहर निकलेगा या फिर बर्तन में दबाव बनाएगा, उसके बजाय पहले बर्तन में पानी भरते ही दूसरे बर्तन में समान जल भरेगा। ओशो के शब्दों में, “यह भी हो सकता है कि हम न जाए चांद पर। कोई जरूरत नहीं है कि हम पौसिफिक महासागर की गहराइयों में उतरे पांच मील, जहा कि सूरज की रोशनी भी नहीं पहुँचती। उसको जान लेने से भी मनुष्य-जाति का कोई बहुत परम मंगल हो जानेवाला नहीं है। यह भी जरूरी नहीं है कि हम एटम को तोड़े और पहचानें। हमें ज्ञान चाहिए। ज्ञानशक्ति है। और सेक्स का ज्ञान बड़ी शक्ति बन सकता है। अज्ञान में जीना हितकर नहीं है और सेक्स के अज्ञान में जीना तो बिल्कुल हित कर नहीं है।

यही स्थिति चक्र की है। हमें चक्र का ज्ञान चाहिए। क्योंकि मुलाधार चक्र में हम प्रचंड उर्जा का निर्माण कर तो सकते हैं लेकिन उसे दूसरे चक्र में चैनल न किया जाय तो विकृति के प्रभाव आने लगते हैं।

इस प्रकार इंटरनेटपर सेक्स स्टोरिज और पोर्न देखने पर क्या असर होता है? क्या होता है जब हम लगातार पोर्न देखते रहते हैं। इसके हम पर पड़नेवाले अलग-अलग साइड इफेक्ट क्या हैं और उनसे कैसे छुटकारा पाया जा सकता है ये जानना आज के युवा पीढ़ी के लिए बेहद जरूरी है। क्योंकि आजकल व्यक्ति जो अंदर से कुंठित होने लगते हैं। खाली वक्त में दोस्तों के साथ घुमने-फिरने, एन्जाय करने के बजाय पोर्न वेबसाइट देखते रहते हैं फिर चाहे वो उनका बेडरूम हो या आफिस। हम इसके आदी बनते चले जाते हैं ये जाने बगैर की इसके हम पर क्या दुष्प्रभाव पड सकते हैं। इस के अलग-अलग बुरे परिणाम इस प्रकार हैं। १) शरीर का कमजोर होने लगना जिसमें चेहरे थी रौनक खो जाना शामिल है। २) हर वक्त शरीर में एक कम्पन और शर्मिंदगी ३) हर वक्त सस्ती और किसी काम में मन न लगना। कामवासना की भावना।

है आकाश में जाकर, संभोग उस सीढ़ी का पहला सोपान है, पहला पाया है। है आकाश में जाकर, संभोग उस सीढ़ी का पहला सोपान है, पहला पाया है। और जो इस पाए के ही विरोध में जाते हैं व आगे बढ़ नहीं पाते। जो इस पहले पाए को इंकार करने लगते हैं, वे दूसरे पाए पैर नहीं रख सकते हैं। इस पहले पाए पर भी अनुभव से जान से, बोध से पैर रखना जरूरी है। इसलिए नहीं कि हम उसी पर रुके रह जाएं। बालिक इसलिए की हम उस पर पैर रखकर आगे निकल जा सके।”

संपेक्ष में मनुष्य जाति के साथ एक अदभूत दूरघटना हो गई इंटरनेट का अविष्यकार, इंटरनेट के माध्यम से वह पहले पाए के विरोध में हो गया है और अंतिम पाए पर पहुँचना चाहता है। उसे पहले पाए का ही अनुभव नहीं उसे दीए का अनुभव नहीं और वह सूरज की अनुभव का आकांक्षा करता है। यह कभी भी नहीं हो सकता। जो दीया मिला है। प्रकृति की तरफ से, पहले उस दीए की रोशनी को समझ लेना जरूरी है। पहले उस दीए की हल्की सी रोशनी को, जो क्षण भर में जीती है और बुझ जाती है, जरा सा हवा का झोंका जिसे मिटा देता है। उस रोशनी को भी जान लेना जरूरी है। ताकि सूरज की आकांक्षा की जा सके, ताकि सूरज तक पहुँचने के लिए कदम उठाया जा सके। संगीत के छोटे से अनुभव से उस परम संगीत की तरफ जाया जा सकता है। एक बूँद को जान लेना, पूरे सागर को जान लेने के लिए पहला कदम है। एक छोटे से अणू है जो प्रकृति की तरफ से मनुष्य को मुपत में मिला हुआ है, लेकिन हम उसे जान नहीं पाते हैं। आँख बंद करके जी लेते हैं, किसी तरह, पीठ फेरकर जी लेते हैं किसी तरह। उसकी स्वीकृति नहीं हमारे मन में, स्वीकार नहीं हमारे मन में। आनंद और उत्साह से उसे जानने और उसमें प्रवेश करने की कोई विधि नहीं हमारे हाथ में। इंटरनेट रुपी चंगुल में न फसकर

“वासनारुपी अंधकार में.....”


Principal

दीया का दीप बनना जिंदगी है.....

पत्थर का तोड़ निर्झर का बहना जिंदगी है..

मैं चाहता हू किसी पेड़ तले निश्वास ले लू

लेकिन कोई कह रहा है.. रात दिन चलना जिंदगी है।”

संदर्भ -

- १) जागरूक यू ट्यूब चैलन
- २) दै. सकाळ, मराठवाडा आवृत्ति रविवार दि. १९/१/२०२० पृ.क्र. ३,५
- ३) ओशो 'संभोग से समाधि की ओर' डायमंड बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण २०१२ए पृ. ४६



Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad